

प्रभावित लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए हवाई मार्ग से बचाव की तैयारी



चक्रवात अर्णव का कहर

बाढ़ में घिरे 300 गांव, गंजम जिले में भारी बारिश से बिगड़े हालात

नईदुनिया ब्यूरो, भुवनेश्वर: ओडिशा में चक्रवात अर्णव के प्रभाव से हो रही भारी वर्षा ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। राज्य के गंजम जिले में बाढ़ के कारण लगभग 300 गांव पानी से घिर गए हैं। प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने के लिए राज्य सरकार हवाई बचाव अभियान चलाने की तैयारी कर रही है। इसके लिए केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय से समन्वय किया जा रहा है। हालांकि, लगातार वर्षा और नीचे तक छाए बादलों के कारण हवाई अभियान में देरी होने की आशंका है। राज्य की मुख्य सचिव अनु गंग ने गुरुवार को बताया कि गंजम जिले में पिछले तीन दिनों से अत्यधिक वर्षा हो रही है। इसके कारण रश्मिकुल्या नदी का जलस्तर बढ़ गया है और आसपास के गांवों तथा कस्बों में बाढ़ का पानी भर गया है। सोरड़ा क्षेत्र में स्थिति विशेष रूप से गंभीर बनी हुई है। वहीं, अस्का क्षेत्र में नदी का जलस्तर खतरे के निशान के करीब पहुंच गया है। दिगपहाड़ी क्षेत्र में भी लगातार वर्षा के कारण बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गए हैं।

बचाव अभियान में जुटी टीमें

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए राष्ट्रीय आपदा मोचन बल और ओडिशा आपदा त्वरित कार्रवाई बल की टीमें अभियान चला रही हैं। राज्य सरकार ने अतिरिक्त बचाव दल भी गंजम जिले में भेजा है। अधिकारियों के अनुसार, जिन गांवों तक सड़क मार्ग से पहुंचना कठिन हो रहा है, वहां लोगों को निकालने के लिए हेलीकाप्टर की सहायता लेने की योजना बनाई गई है। मुख्य सचिव के अनुसार, पहले चरण में लगभग 120 लोगों को हवाई मार्ग से सुरक्षित निकालने की योजना है। इसके लिए भारतीय तटरक्षक बल से हेलीकाप्टर उपलब्ध कराने और आवश्यक व्यवस्थाएं करने में सहयोग लिया जा रहा है। हालांकि, मौसम अनुकूल नहीं होने पर अभियान शुरू करने में देरी हो सकती है। प्रशासन को उम्मीद है कि वर्षा कम होने पर बचाव दल प्रभावित इलाकों तक आसानी से पहुंच सकेंगे।



कई इलाकों में बढ़ी परेशानी

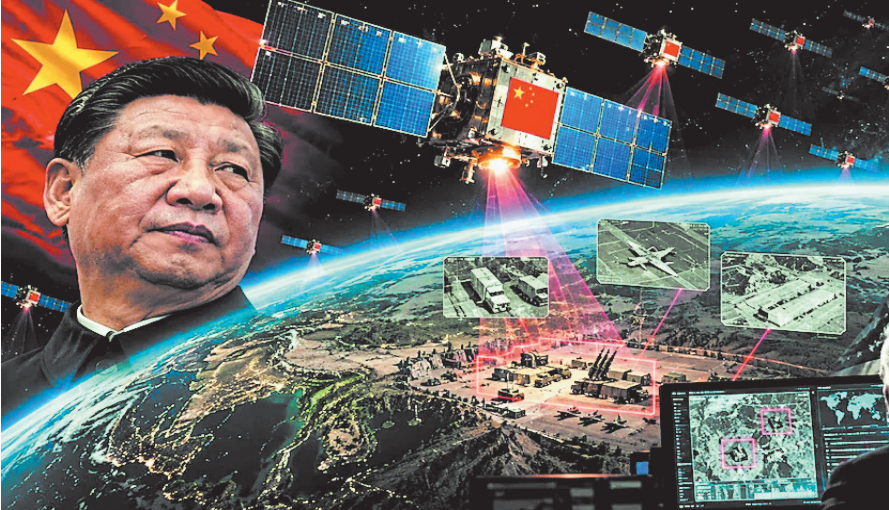
गंजम जिले के सनाखेमुंडी और अस्का क्षेत्रों के कई गांव बाढ़ से प्रभावित हैं। नदी का पानी बस्तियों में भरने के कारण लोगों की आवाजाही बाधित हुई है। लगातार वर्षा से निचले इलाकों में पानी जमा होने और नदी का जलस्तर बढ़ने से स्थिति पर प्रशासन लगातार नजर रख रहा है। राज्य सरकार प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने और राहत कार्यों में तेजी लाने के प्रयास कर रही है। फिलहाल बचाव दलों की प्राथमिकता बाढ़ में फंसे लोगों तक पहुंचना और उन्हें सुरक्षित निकालना है। आने वाले समय में मौसम की स्थिति के अनुसार हवाई बचाव अभियान आगे बढ़ाया जाएगा।

चीन रख रहा अंतरिक्ष से दुनिया पर नजर अमेरिका की बढ़ी चिंता, चीन के 510 से ज्यादा जासूसी सैटेलाइट

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: चीन ने अंतरिक्ष में अपनी सैन्य निगरानी क्षमता तेजी से बढ़ाई है। अमेरिकी रक्षा खुफिया एजेंसी (डीआईए) की 2026 की रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के पास 510 से अधिक सैन्य निगरानी उपग्रह हैं। वर्ष 2018 की तुलना में इनकी संख्या तीन गुना से ज्यादा हो चुकी है। इन उपग्रहों के जरिए चीन दूसरे देशों के सैन्य ठिकानों, युद्धपोतों और लड़ाकू विमानों की गतिविधियों पर नजर रख सकता है। चीन के सभी उपग्रह एक जैसी तकनीक पर काम नहीं करते। कुछ जमीन की तस्वीरें लेते हैं, जबकि कुछ रडार की मदद से बादलों के बीच भी निगरानी कर सकते हैं। वहीं, कुछ उपग्रह इलेक्ट्रॉनिक संकेतों से जुड़ी जानकारी जुटाते हैं। इनसे मिलने वाले आंकड़े चीन की सैन्य योजना बनाने में मदद कर सकते हैं।

30 मिनट में तस्वीर लेने का दावा

अमेरिकी रिपोर्ट के अनुसार, चीन का उपग्रह नेटवर्क दुनिया के किसी भी हिस्से की तस्वीर 30 मिनट या उससे कम समय में लेने में सक्षम



है। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि चीन हर जगह लगातार निगरानी कर सकता है। फिर भी, कम समय में तस्वीरें हासिल करने की क्षमता सैन्य गतिविधियों पर नजर रखने में महत्वपूर्ण हो सकती है।

अमेरिकी युद्धपोत भी निगरानी के दायरे में

चीन की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमता का असर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में खास तौर पर पड़ सकता है। दक्षिण चीन

सागर, ताइवान के आसपास और हिंद महासागर में अमेरिका तथा उसके सहयोगी देशों की सेनाएं सक्रिय रहती हैं। चीन के उपग्रह अमेरिकी विमानवाहक पोतों, युद्धपोतों और लड़ाकू विमानों की गतिविधियों से जुड़ी जानकारी जुटाने में मदद कर सकते हैं।

अंतरिक्ष में बढ़ रहा सैन्य मुकाबला

चीन संचार और वैज्ञानिक

अनुसंधान के साथ सैन्य उद्देश्यों के लिए भी अंतरिक्ष तकनीक विकसित कर रहा है। अमेरिकी स्पेस फोर्स के मुताबिक, चीन ऐसी क्षमताओं पर भी काम कर रहा है, जिन्हें दूसरे देशों के उपग्रहों के संचालन में बाधा पहुंचाई जा सकती है या उन्हें नुकसान हो सकता है। इससे अमेरिका और चीन के बीच अंतरिक्ष में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा बढ़ने की आशंका है।

शेख हसीना के देश छोड़ने का वीडियो साझा करने वाले पूर्व वायुसेना अधिकारी का शव नदी में मिला

ढाका, एजेंसी: बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के देश छोड़ने से जुड़ा वीडियो साझा करने वाले पूर्व वायुसेना अधिकारी केएम तहसीफ सौरी का शव संदिग्ध परिस्थितियों में तुराग नदी से बरामद हुआ है। 28 वर्षीय तहसीफ मंगलवार से लापता थे। उनकी जेब में मिले आईफोन की मदद से शव की पहचान हुई।

उनकी चचेरी बहन ने मौत को हत्या बताते हुए आरोप लगाया कि वीडियो वायरल होने के बाद से उन्हें लगातार परेशान किया जा रहा था। जानकारी के मुताबिक, बुधवार, 28 अक्टूबर की शाम ढाका के पास टोंगी बंदरगाह और उत्तरखान इलाके के नजदीक नदी में एक शव दिखाई दिया। स्थानीय लोगों ने आपातकालीन हेल्पलाइन

999 पर पुलिस को सूचना दी। टोंगी नदी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को बाहर निकाला। उस समय मृतक की पहचान नहीं हो पाई थी।

युवक ने काली शर्ट और सफेद पैंट पहन रखी थी। तलाशी के दौरान उसकी जेब से आईफोन और हाथ घड़ी मिली। फोन के जरिए उसकी पहचान पूर्व फ्लाइट

लेफ्टिनेंट केएम तहसीफ सौरी के रूप में हुई। उनका परिवार ढाका के उत्तरा सेक्टर-18 में रहता है।

तहसीफ उस वीडियो को रिकॉर्ड करने और साझा करने के आरोपों के कारण चर्चा में आए थे, जिसमें 5 अगस्त 2024 को बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के दौरान शेख हसीना के देश छोड़ने की घटना दिखाई गई थी।

खतरा

होटल, घर और सड़कें बनने से बढ़ रही चिंता, अध्ययन में पर्वतीय क्षेत्रों की आपदा संबंधी संवेदनशीलता उजागर

हिमालय में तेजी से बढ़ता निर्माण, तीन लाख लोगों पर बाढ़ का खतरा

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: हिमालयी क्षेत्रों में तेजी से हो रहे निर्माण कार्यों ने बाढ़ के खतरे को लेकर चिंता बढ़ा दी है। पहाड़ों पर होटल, घर और सड़कें बनाने की गतिविधियां लगातार बढ़ रही हैं। इस बीच एक अध्ययन में सामने आया है कि हिमालय के संवेदनशील क्षेत्रों में रहने वाले लगभग तीन लाख लोगों पर बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। अध्ययन ने पर्वतीय क्षेत्रों में विकास कार्यों और प्राकृतिक आपदाओं के बीच बढ़ते संबंधों की ओर ध्यान दिलाया है। हिमालय का भूभाग भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। यहां खड़ी ढलानें,

संकरी घाटियां और तेजी से बहने वाली नदियां मौजूद हैं। ऐसे क्षेत्रों में भारी वर्षा होने पर अचानक बाढ़ आने की आशंका बढ़ जाती है। पहाड़ों पर लगातार निर्माण होने से भूमि की प्राकृतिक स्थिति में बदलाव आता है, जिससे पानी के बहाव और मिट्टी के कटाव पर भी असर पड़ सकता है। अध्ययन के अनुसार, जिन क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा अधिक है, वहां बड़ी संख्या में लोग निवास कर रहे हैं। घरों, होटलों और अन्य भवनों के निर्माण के साथ सड़कों का विस्तार भी तेजी से हो रहा है। इससे पहले से संवेदनशील क्षेत्रों में जनसंख्या और संपत्तियों के



जोखिम में आने की आशंका बढ़ रही है। हिमालयी क्षेत्रों में सड़क

गतिविधियां भी प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं। यदि निर्माण कार्यों में स्थानीय भूभौमय परिस्थितियों और जल निकासी की व्यवस्था का पर्याप्त ध्यान नहीं रखा जाता, तो वर्षा के दौरान पानी के बहाव में बाधा उत्पन्न हो सकती है। ऐसी परिस्थितियां कुछ स्थानों पर बाढ़ और भूस्खलन के खतरे को बढ़ा सकती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में बाढ़ का प्रभाव केवल घरों और भवनों तक सीमित नहीं रहता। इससे सड़क संपर्क बाधित हो सकता है और लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने में कठिनाई आ सकती है। इसके अतिरिक्त पेयजल आपूर्ति,

आजीविका और स्थानीय पर्यटन गतिविधियां भी प्रभावित हो सकती हैं। अध्ययन में सामने आए निष्कर्ष हिमालयी क्षेत्रों में विकास कार्यों की योजना बनाते समय प्राकृतिक जोखिमों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता रेखांकित करते हैं। संवेदनशील स्थानों पर निर्माण की अनुमति देने से पहले भूभाग, वर्षा और जल निकासी से जुड़े पहलुओं का आकलन करना महत्वपूर्ण है। बाढ़ के संभावित प्रभावों को ध्यान में रखकर ही इन क्षेत्रों में सुरक्षित और टिकाऊ विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

एंबुलेंस में ऑक्सीजन सिलेंडर फटा, महिला समेत 10 की मौत

► सिंध प्रांत के थारपारकर जिले में हादसा, प्रसव के बाद महिला को अस्पताल ले जा रहे थे



थारपारकर (पाकिस्तान), एजेंसी: पाकिस्तान के सिंध प्रांत में गुरुवार को एक दर्दनाक हादसे में एंबुलेंस के भीतर ऑक्सीजन सिलेंडर फटना से कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एक महिला भी शामिल है, जिसे बच्चे को जन्म देने के बाद स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां होने पर जिला अस्पताल ले जाया जा रहा था। हादसा थारपारकर जिले के नगरपारकर क्षेत्र में हुआ। घटना के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, महिला को दानो ढांढल स्थित स्वास्थ्य केंद्र से मीठी शहर के जिला अस्पताल ले जाया जा रहा था। प्रसव के बाद उसकी तबीयत बिगड़ने के कारण उसे बेहतर उपचार के लिए दूसरे अस्पताल भेजा गया था। इसी

दौरान एंबुलेंस में रखा ऑक्सीजन सिलेंडर फट गया। विस्फोट इतना भीषण था कि उसमें सवार लोगों की जान चली गई। थारपारकर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आरिफ अजीज जाफरी ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि अब तक 10 लोगों की मौत की जानकारी सामने आई है। मृतकों में उपचार के लिए ले जाई जा रही महिला भी शामिल है। हादसे के समय एंबुलेंस महिला को जिला अस्पताल पहुंचाने के लिए रास्ते में थी। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, एंबुलेंस चालक वाहन के भीतर ऑक्सीजन सिलेंडर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर

खिसका रहा था। इसी दौरान सिलेंडर में विस्फोट हो गया। हालांकि, विस्फोट के पीछे की वास्तविक वजह अभी स्पष्ट नहीं हुई है। पुलिस इस पहलू की भी जांच कर रही है कि सिलेंडर को हटाने के दौरान किन परिस्थितियों में यह घटना हुई। घटना के बाद संबंधित अधिकारियों ने जांच के आदेश दिए हैं। पुलिस मामले की पड़ताल कर रही है, ताकि हादसे के कारणों का पता लगाया जा सके। अधिकारियों के अनुसार, फिलहाल 10 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। जांच पूरी होने के बाद ही घटना से जुड़े अन्य तथ्यों की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

सोमालिया में 20 सैनिकों की मौत

मोगादिशु, एजेंसी: सोमालिया में अल-कायदा से जुड़े चरमपंथी संगठन अल-शबाब के हमले में कम से कम 20 सैनिकों की मौत हो गई। एक सैन्य अधिकारी ने हमले के बाद अपने साथी सैनिकों के शव देखने की जानकारी दी है। सरकार ने सैन्य वाहनों को नुकसान पहुंचने की पुष्टि की है, लेकिन सैनिकों की मौत और घायल होने के संबंध में आधिकारिक तौर पर विस्तृत जानकारी नहीं दी। यह हमला सोमवार को दक्षिणी सोमालिया के जामोका गांव के पास हुआ। सैन्य

अधिकारी अबशिर अब्दीकरीम के मुताबिक, सैनिक लीगो से बे क्षेत्र के बुरहाकावा जिले में स्थित जामोका की ओर बढ़ रहे थे। इसी दौरान चरमपंथियों ने घात लगाकर हमला कर दिया। इसके बाद दोनों पक्षों के बीच कई घंटे तक गोलीबारी हुई। अल-शबाब ने हमले की जिम्मेदारी ली है। यह संगठन करीब दो दशक से सोमालिया की सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा है। मुठभेड़ के दौरान सेना ने करीब 75 चरमपंथियों को मार गिराया।

जंगल के बीच झरना और कांच का पुल एकतानगर में 9.49 करोड़ से बना वर्षावन

► प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करेंगे लोकार्पण, प्राकृतिक वातावरण के बीच विकसित किया गया आकर्षक पर्यटन स्थल

नईदुनिया ब्यूरो, एकतानगर (गुजरात): गुजरात के एकतानगर में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 9.49 करोड़ रुपये की लागत से वर्षावन विकसित किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस वर्षावन का लोकार्पण करेंगे। जंगल के बीच प्राकृतिक वातावरण, आकर्षक झरने और कांच से बने पुल की विशेषता वाला यह परिसर पर्यटकों के लिए नया आकर्षण बनने जा रहा है।

इस वर्षावन को इस तरह विकसित किया गया है कि यहां आने वाले पर्यटकों को घने जंगल के बीच घूमने और प्रकृति के करीब होने का अनुभव मिल सके। परिसर में हरियाली के साथ झरने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा कांच का आकाशपथ भी बनाया गया है, जहां से आसपास के प्राकृतिक दृश्य देखे जा सकेंगे।



परियोजना का उद्देश्य एकतानगर आने वाले पर्यटकों को प्रकृति से जुड़ा अलग अनुभव उपलब्ध कराना है। यहां जंगल जैसे वातावरण के बीच घूमने का अवसर मिलेगा। झरने और कांच के पुल को परिसर के प्रमुख आकर्षणों के रूप में विकसित किया गया है। इससे पर्यटकों को एक ही स्थान पर प्राकृतिक सुंदरता और विशेष स्थापत्य का अनुभव मिल सकेगा। एकतानगर में पहले से ही कई

पर्यटन स्थल मौजूद हैं। यहां स्थित स्टेच्यू ऑफ यूनिटी देश-विदेश के पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। इसके आसपास पर्यटन सुविधाओं के विकास से क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों को नए विकल्प उपलब्ध हो रहे हैं। वर्षावन परियोजना भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल मानी जा रही है।

9.49 करोड़ रुपये की लागत से तैयार इस परिसर के लोकार्पण के बाद पर्यटकों को एकतानगर में

घूमने के लिए एक और स्थान मिलेगा। जंगल, झरने और कांच के पुल का संयोजन इस स्थल को अन्य सामान्य उद्यानों से अलग पहचान दे सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों होने वाले लोकार्पण को लेकर इस परियोजना पर ध्यान केंद्रित है। यह परिसर एकतानगर के पर्यटन आकर्षणों में शामिल होगा। इसके माध्यम से पर्यटकों को प्राकृतिक वातावरण में समय बिताने और आसपास की सुंदरता देखने का अवसर मिलेगा।

जलती नाव नदी में बहने लगी, आग बुझाने पानी में कूदे दो दमकलकर्मी

कांझिकोड, एजेंसी: केरल के कांझिकोड में गुरुवार सुबह मछली पकड़ने वाली एक नौका में अचानक आग लग गई। आग तेजी से फैलते हुए इंजन और ईंधन टैंक तक पहुंच गई। इसी दौरान नौका को बांधने वाली रस्सी जलकर टूट गई और जलती हुई नौका नदी में बहने लगी। इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में दमकल विभाग के दो अधिकारी आग बुझाने के लिए पानी में उतरे और नौका तक पहुंचने का प्रयास किया। दमकल विभाग के अधिकारियों के अनुसार, 'आरजे' नाम की यह नौका पुराने फारुक पुल के नीचे खड़ी थी। आग लगने के बाद रस्सी टूटने से नौका बहने लगी, जिससे अग्निशमन अभियान में सुविक्षलें बढ़ गईं। स्थिति पर काबू पाने के लिए अग्निशमन एवं बचाव सेवा के कर्मचारियों ने मौके पर दो दमकल गाड़ियां तैनात कीं। इनमें से एक गाड़ी को पुल पर खड़ा कर जलती नौका पर पानी की बौछर की गई।

